विचार बिन्दु

हर चीज़ बदलती है, नष्ट कोई चीज़ नहीं होती –अरविन्द घोस

बारिश के मौसम में घर में औषधीय पौधे लगाएं

मानसून अपने साथ अपार खुशियां लेकर आता है। लोगों को पीने के लिए जहाँ पानी मिलता है वहां किसान अपने खेतों में बुवाई शुरू कर देते है। इसी के साथ देशभर में पौधरोपण का कार्य भी शुरू हो जाता है। इस समय सभी प्रकार के पेड़ पौधे लगाए जा सकते है। मॉनसून का मौसम औषधीय पौधों को उगाने के लिए सबसे बेहतरीन है। हमारे बुजुर्ग कहते है हमें औषधीय पौधे अपने घरों पर लगाने चाहिए जो हमारे जीवन को नवजीवन प्रदान करेंगे। यह वह समय है जब हम पेड़ पौधे लगाकर देश को हराभरा बना सकते है। आयुर्वेद में बहुत से औषधीय पौधे और जड़ी-बूटियाँ शामिल हैं, जो हमारी विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं का प्रभावी ढंग से उपचार कर सकते हैं और हमारे समग्र स्वास्थ्य के लिए अच्छे साबित हो सकते हैं। ये पौधे प्राचीन काल से ही विभिन्न औषधीय प्रयोजनों के लिए उपयोग किए जाते रहे हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा में इन पौधों का उपयोग दवाई के रूप में किया जाता रहा है। बताया जाता है एक वृक्ष अपने पूरे जीवन में हर तरह से मनुष्य के काम आता है। भोजन प्रदान करने, छाँव देने, घर बनाने को लकड़ी देने से लेकर सांसे लेने के लिये जीवनदायिनी ऑक्सीजन भी देता है। पेड़-पौधों को लेकर कई प्रकार के शोध होते रहते है। हर शोध में पेड़-पौधों को जीवनदाई बताया जाता है। हाल ही एक शोध रिपोर्ट में बताया गया की पेड़-पौधे बेहद संवेदनशील होते है। शोर से पेड़ पौधे मुरझा जाते है और उनकी ग्रोथ पर बुरा असर पड़ता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक लोगों की आयुर्वेदिक पौधों में रूचि बढ़ रही है। राजधानी जयपुर की विभिन्न नर्सरियों में लोग बड़ी संख्या में औषधीय पौधे खरीद रहे है। राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विभिन्न प्रदेशों और विदेशों से आने वाले छात्र औषधीय पौधों के लाभों की जानकारियां प्राप्त कर रहे है।

मानसून के आते ही लोगों के समक्ष यह दुविधा बन जाती है की इस मानसून में कौन से पौधे लगाएं जो मानव जीवन के लिए हितकारी हो। औषधीय पौधेंइम्युनिटी बढ़ाने के साथ हमें विभिन्न प्रकार के रोगों से घर बैठे बचाता है। हमारे बड़े बुजुर्ग आज भी हमें औषधीय पौधों की बात बताते है। बहुत से बड़े बुजुर्ग आज भी अंग्रेजी दवाओं का सेवन नहीं करते और अपने स्वास्थ्य के राज की बातें बताते नहीं थकते मगर अपनी भागदौड़ भरी लाइफ स्टाइल में स्वस्थ जीवन के मंत्र की बातें सुनना पसंद नहीं करते। फलस्वरूप विभिन्न शारीरिक रोगों को भोगते हुए जैसे-तैसे अपने जीवन की गाड़ी को हांकते है। अपने घरों पर औषधीय पौधे लगाएं तो ये हमें प्राण वायु तो देते ही है साथ ही स्वस्थ जीवन की राह भी दिखाएंगे।

पेड़-पौधे हमारे शरीर में होने वाली विभिन्न बीमारियों से छुटकारा दिलाने के लिए हमें बहुत कुछ दे सकते हैं। प्राचीन काल में मानव ने तरह-तरह के पेड़-पौधों की खोज कर खुद को निरोगी रखा। मानव सभ्यता के विकास के साथ विज्ञान ने हमें नयीनयी ऊंचाइयों तक पहुँचाया, इसमें कोई दो राय नहीं है मगर औषधीय पौधों की महत्ता कभी कम नहीं हुई। भारत में औषधीय गुण वाले असंख्य पेड़-पौधे हैं। भारतीय पुराणों, उपनिषदों, रामायण एवं महाभारत जैसे प्रमाणिक ग्रंथों में इसके उपयोग के अनेक साक्ष्य मिलते हैं। रामायण में संजीवनी बूटी की चर्चा आज भी घर घर में सुनी जा सकती है। बहुत सारी अंग्रेजी दवाइयों में आज भी औषधीय पौधों का मिश्रण किया जाता है। सर्दी, जुकाम, बुखार, बीपी, शुगर, उलटी दस्त जैसी सामान्य बीमारियों से लेकर कैंसर जैसी असाध्य बीमारियों का इलाज भी हमारे औषधीय पौधों में है। यदि इन पेड़ पौधों का हम उचित रखरखाव कर विभिन्न रोगों के इलाज में सही ढंग से उपयोग करें तो ये हमारे स्वस्थ जीवन के लिए बेहद लाभदायक हो सकते है।

पेड़ पौधों और वनों से हमें एक नहीं अपितु अनेकों लाभ है। वन और जीवन दोनों एक-दूसरे पर आश्रित हैं। वनों से हमें शुद्ध ऑक्सीजन मिलता है और मनुष्य और अन्य किसी भी प्राणी का जीवन ऑक्सीजन के बिना नहीं चल सकता। वृक्ष और वन भू-जल को भी संरक्षित करते हैं। जैव-विविधता की रक्षा भी वनों की रक्षा से ही संभव है। विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए बहुमूल्य वनौषधियां हमें जंगलों से ही मिलती हैं।

औषधीय एवं सुरभित पौधे हमारी धरोहर हैं जिनका वैश्विक महत्व है। विश्व में असंख्य औषधीय एवं सुरभित पौधों की प्रजातियाँ हैं। उनमें से अनेक पौधों का उपयोग हम विभिन्न कारणों से करते हैं और अनेक हमसे अपरिचित हैं। भारत के रेड डाटा बुक में 427 संकटग्रस्त पौधों के नाम दर्ज हैं, इनमें से 28 लुप्त, 124 संकटग्रस्त, 81 नाजुक दशा में, 100 दुर्लभ तथा अन्य पौधे हैं। पारम्परिक औषधि का कोई विपरीत प्रभाव न होने के कारण तथा स्वस्थ जीवन शैली के लिए वर्तमान समय में भी इनका महत्व काफी अधिक बढ़ गया है। अभी भी विकसित देशों में 80 प्रतिशत जनसंख्या पारम्परिक औषधीय ज्ञान पर ही निर्भर करती हैं। भारत के पहाड़ी और जंगली इलाकों में उपलब्ध तीन सौ से अधिक औषधीय वनस्पतियों की प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर है। अगर सरकार इनके संरक्षण की दिशा में पहल नहीं करेगी तो आने वाले वर्षों में कई वनस्पतियां विलुप्त हो जाएंगी। सरकार यदि इनके संरक्षण की दिशा में पहल नहीं करेगी तो आने वाले वर्षों में कई वनस्पतियां विलुप्त हो जाएंगी।

हमारे विभिन्न ग्रंथों और प्राचीन पुस्तकों में हजारों ऐसे नुक्खे बताये गए है जो औषधीय पौधों से निकले है। हमारे देश में आज भी लाखों लोग इन नुक्खों का उपयोग करते है। नीम, तुलसी, बेंग साग, ब्राम्ही, हल्दी, चन्दन, चिरायता, अडूसारू, सदाबहार , गुलाब , सहिजन, हडजोरा, करीपत्ता, लहसून, एलोवीरालेवेंडर, जीरा, पुदीना, गिलोय, सूरजमुखी,पीपल, आक, बरगद, आंवला, गूगल, अदरखनीम्बू, पत्थरचूर, शतावर, अजवायन, चुकंदर, चिरचिटी, कुल्थी, घृतकुमारी, करेला, पिपली, मेथी, पुनर्नवा, मदन मस्त, पिपली, चंपा, रजनीगंधा, श्वेत अपराजिता, सर्पगन्धा, अशोक और वलाक आदि औषधीय पौधों में से बहुत से ऐसे भी है जो घरों में लगाए जा सकते है। इनमें बहुत सी प्रजातियां अब लुप्तप्राय है। आवश्यकता इस बात की है इन बहु गुणकारी औषधीय पौधों के विकास की योजनाएं बनाकर आम आदमी को इनके प्रयोग और उपयोग की जानकारी दी जाएं।

पेड़ पौधों और वनों से हमें एक नहीं अपितु अनेकों लाभ है। वन और जीवन दोनों एक-दूसरे पर आश्रित हैं। वनों से हमें शुद्ध ऑक्सीजन मिलता है और मनुष्य और अन्य किसी भी प्राणी का जीवन ऑक्सीजन के बिना नहीं चल सकता। वृक्ष और वन भू-जल को भी संरक्षित करते हैं। जैव-विविधता की रक्षा भी वनों की रक्षा से ही संभव है। विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए बहुमूल्य वनौषधियां हमें जंगलों से ही मिलती हैं। दुनिया में जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक विकास और आधुनिक जीवन शैली की वजह से प्राकृतिक वनों पर मानव समाज का दबाव बढ़ता जा रहा है। इसे ध्यान में रखकर मानव जीवन की आवश्यकताओं के हिसाब से वनों के संतुलित दोहन तथा नये जंगल लगाने के लिए भी विशेष रूप से काम करने की जरूरत है। मनुष्य के जीवन में वन महत्वपूर्ण रहे हैं। परन्तु जैसे-जैसे सभ्यता का विकास हुआ वैसे-वैसे मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वृक्षों को काटना आरम्भ कर दिया। वनों की लगातार कटाई होती गई और वातावरण पर भी इसका प्रभाव पड़ा। आज हमारी स्थिति यह हो गई है की वृक्षों की छाव मिलनी भी दुर्लभ हो गई है।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 12 जुलाई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, कृष्ण पक्ष, द्वितिया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र प्रातः 6:36 तक, विष्कुम्भ योग सायं 7:31 तक, तैतिल करण दिन 2:58 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मकर, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से प्रातः 6:36 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग प्रातः 6:36 से सूर्योदय तक है। आज अशून्य शयन व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:27 से 9:08 तक, चर 12:32 से 2:14 तक, लाभ-अमृत 2:14 से 5:38 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:45, सूर्यास्त 7:19

मेष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी।

सिंह
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव बना रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष
व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

राजस्थान : जन सुविधाओं का टोटा, जो हैं उनका हाल खोटा

राजेन्द्र मोहन शर्मा

किसी भी शहर या गांव का आइना होता है जन शौचालय। आप इस नजरिए से राज्य के किसी भी शहर के व्यस्ततम इलाकों की जन सुविधाओं पर नजर डाल लीजिए या तो वे दिखेंगे नहीं अगर हैं तो नाक पर रुमाल बांध कर भी भीतर जाने के लिए अतिरिक्त हिम्मत जुटानी पड़ेगी। यूं भी राजस्थान आज भी बुनियादी जन सुविधाओं के मामले में कई चुनौतियों से जूझ रहा है। इनमें सबसे प्रमुख है सार्वजनिक शौचालयों की कमी और उनकी दयनीय स्थिति। स्वच्छता और स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से सार्वजनिक शौचालय किसी भी समाज की प्रगति का एक महत्वपूर्ण सूचक हैं, लेकिन राजस्थान में यह सुविधा न केवल अपर्याप्त है, बल्कि जो उपलब्ध है, उसका हाल भी खस्ता है। स्कूलों, कॉलेजों, कार्यालयों, राजमार्गों और सार्वजनिक स्थलों पर शौचालयों की स्थिति चिंताजनक है। विशेष रूप से महिलाओं और विकलांगों के लिए सुविधाओं का अभाव, स्वच्छता व्यवस्था की कमी,और पेयजल की अनुपस्थिति इस समस्या को और जटिल बनाती है। स्वच्छ भारत मिशन के बावजूद, कथनी और करनी में भारी अंतर दिखाई देता है। आपको यह भी साफ़-साफ़ दिखाई दे ही रहा है कि जिन इलाकों में ये सुविधाएं हैं भी तो वे सब सरकारी जमीन पर अतिक्रमण की श्रेणी में हैं। आशय स्पष्ट है कोई निगम निकाय यह जहमत नहीं उठाता कि जन सुविधाओं के लिए सड़क न रोकी जाए। वे तो बस खानापूर्ति में लगे रहते हैं।

राजस्थान में सार्वजनिक शौचालयों की स्थिति दशकों से चिंता का विषय रही है। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में शौचालयों की कमी और उनकी खराब रखरखाव व्यवस्था आम लोगों के लिए परेशानी का कारण बनी हुई है। स्वच्छ भारत मिशन, जो 2014 में शुरू किया गया, ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शौचालय निर्माण को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखा था। इस मिशन के तहत राजस्थान में कई शौचालयों का निर्माण हुआ, लेकिन आंकड़े और जमीनी हकीकत में बड़ा अंतर है। नेशनल सैंपल सर्वे ऑफिस (2016) के अनुसार, राजस्थान में कई नए बने शौचालयों का उपयोग नहीं हो रहा, क्योंकि उनमें पानी की सुविधा, सफाई व्यवस्था, या उचित रखरखाव का अभाव है। यह स्थिति न केवल स्वच्छता को प्रभावित करती है, बल्कि स्वास्थ्य और सामाजिक समस्याओं को भी जन्म देती है। शहरी क्षेत्रों में, जहां जनसंख्या घनत्व अधिक है, सार्वजनिक शौचालयों की स्थिति और भी बदतर है। जयपुर, जोधपुर, उदयपुर जैसे बड़े शहरों में कुछ स्थानों पर सामुदायिक शौचालय बनाए गए हैं, लेकिन इनमें से अधिकांश या तो बंद पड़े हैं या उनकी हालत इतनी खराब है कि लोग इनका उपयोग करने से कतराते हैं। उदाहरण के लिए, मिहिजाम जैसे क्षेत्रों में बने सामुदायिक शौचालयों पर ताले लटके हुए हैं, और पानी की कमी के कारण वे बेकार साबित हो रहे हैं। यह स्थिति स्वच्छ भारत मिशन के दावों को खोखला साबित करती हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्थिति कुछ खास बेहतर नहीं है। ग्राम पंचायतों को सामुदायिक शौचालयों के निर्माण और रखरखाव की जिम्मेदारी दी गई है, लेकिन निधि की कमी, जागरूकता का अभाव, और प्रशासनिक उदासीनता के कारण ये प्रयास असफल हो रहे हैं। कई गांवों में शौचालय बनाए तो गए, लेकिन उनकी सफाई और रखरखाव की कोई व्यवस्था नहीं है। इससे ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं और बच्चों को खुले में शौच करने की मजबूरी बनी हुई है। स्कूलों और कॉलेजों में शौचालयों की स्थिति भी चिंताजनक है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) के तहत प्रत्येक स्कूल में लड़कियों और लड़कों के लिए अलग-अलग शौचालयों की व्यवस्था अनिवार्य है, लेकिन राजस्थान के कई स्कूलों में यह नियम लागू नहीं हो पाया है। कई स्कूलों में शौचालयों में पानी की कमी, साबुन या सफाई एजेंटों का अभाव, और नियमित सफाई की कमी देखी गई है। यह स्थिति विशेष रूप से छात्राओं के लिए हानिकारक हैं। बिहार के समस्तीपुर जिले में एक स्कूल में बच्चों को शौचालय और नालियों की सफाई करने के लिए मजबूर किया गया, जो राजस्थान के कई स्कूलों में भी देखा जा सकता है। कार्यालयों और सरकारी दफ्तरों में भी शौचालयों की स्थिति कोई खास बेहतर नहीं है। कई सरकारी कार्यालयों में शौचालयों की संख्या कर्मचारियों और आगंतुकों की जरूरतों के अनुपात में नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में (जनवरी 2025) देश भर के न्यायालय परिसरों में पुरुषों, महिलाओं, विकलांगों, और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए अलग-अलग शौचालयों की व्यवस्था करने का आदेश दिया है, जो यह दर्शाता है कि स्वच्छता को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई है। लेकिन राजस्थान में इस तरह के निर्देशों का पालन कितना हो रहा है, यह एक बड़ा सवाल है।

कई अध्ययनों ने बताया है कि शौचालयों की कमी के कारण महिलाओं और लड़कियों को यौन हिंसा का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा, गर्भवती महिलाओं के लिए भारतीय शैली के शौचालयों का उपयोग करना असुविधाजनक और असुरक्षित हो सकता है। हालांकि कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि उकड़ू बैठने की स्थिति गर्भावस्था में फायदेमंद हो सकती है, लेकिन सार्वजनिक शौचालयों की गंदगी और असुरक्षा इस लाभ को नकार देती है। विकलांगों के लिए शौचालय सुविधाएं लगभग न के बराबर हैं।

कथनी और करनी में अंतर राजस्थान में स्वच्छता के क्षेत्र में सबसे बड़ी बाधा है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत बड़े-बड़े दावे किए गए, लेकिन जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन में कमी साफ दिखाई देती है। कई शौचालय बनाए गए, लेकिन उनके उपयोग की स्थिति, रखरखाव, और पानी की उपलब्धता पर ध्यान नहीं दिया गया। यह स्थिति नगरीय और ग्रामीण स्वायत्त संस्थाओं की उदासीनता को दर्शाती है। नगर पालिकाएं और ग्राम पंचायतें शौचालयों के निर्माण और रखरखाव के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन धन की कमी, प्रशिक्षित कर्मचारियों की अनुपस्थिति, और निगरानी की कमी के कारण ये संस्थाएं अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभा पा रही हैं। पेयजल की व्यवस्था भी सार्वजनिक शौचालयों की स्थिति से गहराई से जुड़ी हुई है। बिना पानी के शौचालय बेकार हैं। राजस्थान, जहां पानी की कमी पहले से ही एक बड़ी समस्या है, वहां शौचालयों में नियमित जल आपूर्ति सुनिश्चित करना एक चुनौती है। कई शौचालयों में हैंडपंप या टैंकर के भरोसे पानी की व्यवस्था की जाती है, लेकिन यह अनियमित और अपर्याप्त है। विदेशों में, जैसे जर्मनी और ऑस्ट्रेलिया में, शौचालयों में पानी की आपूर्ति के लिए उन्नत तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जैसे रेनवाटर हार्वेस्टिंग और रिसाइकिल्ड वाटर सिस्टम। राजस्थान में भी ऐसी तकनीकों को अपनाने की जरूरत है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में जहां पानी की कमी गंभीर है।

इस संदर्भ में, बिंदेश्वरी पाठक जैसे समाज सुधारकों का योगदान प्रेरणादायक है। बिंदेश्वरी पाठक, जिन्होंने सुलभ इंटरनेशनल की स्थापना की, ने भारत में स्वच्छता के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाए। उनके द्वारा शुरू किए गए सुलभ शौचालय परिसरों ने न केवल स्वच्छता को बढ़ावा दिया, बल्कि सामाजिक समावेशिता और महिलाओं की गरिमा को भी प्राथमिकता दी। राजस्थान में भी ऐसे प्रयासों की आवश्यकता है, जहां निजी और सरकारी क्षेत्र मिलकर स्वच्छता के लिए दीर्घकालिक समाधान ढूंढ सकें। पाठक का मॉडल, जिसमें कम लागत वाले, पर्यावरण-अनुकूल शौचालयों का निर्माण और सामुदायिक भागीदारी पर जोर दिया गया, राजस्थान के लिए एक रोडमैप हो सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छ भारत मिशन के तहत शौचालय निर्माण को प्राथमिकता दी, लेकिन कचरा संग्रह और प्रबंधन की तरह शौचालयों के रखरखाव और स्वच्छता के लिए कोई स्पष्ट नीति लागू नहीं की गई। कचरा प्रबंधन के लिए सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट रूल्स (2016) जैसे नियम बनाए गए, लेकिन शौचालयों के रखरखाव और निगरानी के लिए ऐसी कोई व्यापक नीति नहीं है। यदि सरकार राजमार्गों, स्कूलों, और सार्वजनिक स्थानों पर शौचालयों के लिए नियमित निगरानी समितियों का गठन करे, और स्थानीय निकायों को जवाबदेह बनाए, तो स्थिति में सुधार हो सकता है। इसके अलावा, स्वच्छता कर्मचारियों के लिए बेहतर प्रशिक्षण और वेतन, और तकनीकी नवाचारों को अपनाने की जरूरत है। विदेशी उदाहरणों से प्रेरणा लेते हुए, राजस्थान में भी स्मार्ट शौचालयों की अवधारणा को लागू किया जा सकता है। सिंगापुर में, सार्वजनिक शौचालयों की सफाई और रखरखाव के लिए एक राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान चलाया जाता है, जिसमें निजी कंपनियों और सामुदायिक संगठनों की भागीदारी होती है। जापान में, शौचालयों में बायो-टॉयलेट और स्वचालित सफाई प्रणालियां उपयोग की जाती हैं, जो पानी की खपत को कम करती हैं।

राजस्थान में, जहां पानी की कमी एक बड़ी समस्या है, बायो-टॉयलेट और कम पानी वाले शौचालयों को बढ़ावा देना एक व्यवहारिक समाधान हो सकता है। राजस्थान में स्वच्छता की स्थिति को सुधारने के लिए सामुदायिक भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। तेलंगाना के कल्वाकोता गांव की रजिता जैसे उदाहरण, जहां एक महिला ने अपने गहने बेचकर 40 परिवारों के लिए शौचालय बनवाए, यह दर्शाते हैं कि सामुदायिक पहल कितनी प्रभावी हो सकती है। राजस्थान में भी स्थानीय समुदायों, गैर-सरकारी संगठनों, और निजी क्षेत्र को शामिल करके स्वच्छता के प्रति जागरूकता और भागीदारी बढ़ाई जा सकती है। अंत में, राजस्थान में सार्वजनिक शौचालयों की स्थिति को सुधारने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। सरकार को न केवल शौचालय निर्माण पर ध्यान देना चाहिए, बल्कि उनके रखरखाव, पानी की उपलब्धता, और समावेशी डिज़ाइन पर भी जोर देना चाहिए। महिलाओं और विकलांगों की जरूरतों को प्राथमिकता देना, राजमार्गों पर स्वच्छ शौचालयों की व्यवस्था करना, और स्थानीय निकायों को जवाबदेह बनाना समय की मांग है। बिंदेश्वरी पाठक जैसे समाज सुधारकों की प्रेरणा और विदेशी मॉडलों को अपनाकर राजस्थान स्वच्छता के क्षेत्र में एक नया अध्याय लिख सकता है। लेकिन इसके लिए कथनी और करनी के बीच के अंतर को पाटना होगा, ताकि हर नागरिक को स्वच्छ और सुरक्षित शौचालय की सुविधा मिल सके।

–राजेन्द्र मोहन शर्मा,
वरिष्ठ साहित्यकार, शिक्षाविद्
और चिन्तक

कोटा जिन्दा है : टाटा जिन्दा रहेगा

राम निवास बैरवा

1960 के दशक में डी.सी.एस. ग्रुप की तरफ से श्री राम फर्टिलाइजर एण्ड केमीकलस नाम से कोटा में बड़ी औद्योगिक इकाई लगाई जाने के पहले कोटा 'कोटा डोरिया' साड़ियों और 'कोटा स्टोन' के नाम से विख्यात था। लेकिन श्री राम फर्टिलाइजर्स एण्ड केमीकल के बाद इंस्ट्रूमेंटेशन लिमिटेड सोवियत संघ के सहयोग से केन्द्रीय सरकार का बड़ा उद्योग लगाने के बाद कानपुर के जे.के. ग्रुप ने जे. के. सिंथेटिक लिमिटेड नाम से कई नायलोन फैक्टियां लगाई जिनमें 10 हजार से ज्यादा मजदूर काम करते थे। साथ ही, ओरिएण्टल पॉवर केबल्स लिमिटेड केबल बनाने का बड़ा कारखाना भी था। इन औद्योगिक इकाईयों के साथ ही कोटा राजस्थान का सबसे बड़ा औद्योगिक शहर बन गया था- उसके बाद अलवर और अब भीलवाड़ा का नाम आता था।

जे.के. सिंथेटिक के करीब दस कारखाने और संस्थान कोटा में थे, वे सिंथेटिक धागा बनाने में डी.एम.टी. (डाई मिथाइल टेरीफ्टालेट) का कच्चे माल के रूप में उपयोग करते थे। वहीं नई उभरती अंबानी की रिलाइंस इण्डस्ट्रीज पी.टी.ए. (प्यूरीफाइड टेरी फ्टालेट) का उपयोग करते थे। चूंकि, अंबानी ने पी.टी.ए. उत्पादन के लिए नये कारखाने लगाये थे जिसका उपयोग सिंथेटिक वस्त्र उद्योग में कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाता था। इस प्रकार जे.के. सिंथेटिक्स लिमिटेड और बांबे डाइंग के प्रतिद्वंद्वी के रूप में अंबानी का रिलाइंस इण्डस्ट्रीज उभरा। प्रतिद्वंद्वी को धाराशाही करने के लिए जे.के. के खास इंजीनियरों को अपने पास बुलाकर शुरूआत की। साथ ही अपने पारिवारिक झगड़ों से उभर कर जे.के. सिंथेटिक्स का पी.टी.ए. के उपयोग के लिए मशीनों का नीवकरण कर पाते उसके पहले ही जे.केसिंथेटिक्स को बंद करना पड़ गया। बहुत बड़ा औद्योगिक कोटा शहर औद्योगिक रूप से उजाड़ होने की स्थिति में पहुंच गया। इंस्ट्रूमेंटेशन भी बंद कर दी गई। केवल श्री राम फर्टिलाइजर्स बची और चंबल फर्टिलाइजर नाम से नया खाद कारखाना लगा है।

उल्लेखनीय है कि कोटा में लगभग सभी तरह से बिजली का उत्पादन किया जाता है पन बिजली घर भी है, थर्मल पॉवर भी है, परमाणु बिजली घर भी है तो गैस से भी बिजली पैदा की जाती है, सोलर का घरेलू उत्पादन भी होता है लेकिन पवन चक्कियां भी मिल जायेगी। जे.के. सिंथेटिक्स के बंद होने और अपनी औद्योगिक बरबादी के बाद कोटा में कोचिंग का एक नया व्यवसाय शुरू किया गया जो पिछले तीस वर्षों में सबसे ज्यादा डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस. देने वाला शहर बन गया है। आज की तारीख में कोटा में लाखों विद्यार्थी जेईई और नीट-पी.जी. की कोचिंग लेते हैं जिससे कोटा भारत की कोचिंग केपीटल बन गया है। कोटा किसी की बदनियती के बावजूद जिंदा है।

टाटा परिवार भारत का राष्ट्रीय औद्योगिक घराना है जो सवा 150 सालों से भी ज्यादा समय से भारत के राष्ट्रीय उद्योगों की श्रृंखला लगाता जा रहा है। टाटा घराना व्यापारिक घराना ही नहीं हैं। वह विशिष्ट औद्योगिक उत्पादनों के कारखानों का भी संचालन करता रहा है। इंडियन एयरलाइंस जो मूलतः टाटा की ही टाटा एयरलाइंस थी, भारत सरकार द्वारा बेची जाने पर टाटा ने ही फिर से उसे खरीद लिया। यह महंगा सौदा था।

बीमार हवाई जहाजों के लिए दांव लगाना था, अन्यथा अम्बानी या अडानी भी इंडियन एयरलाइंस को ले सकते थे। अडानी मूलतः ठेकेदार व्यापार ही है जो सभी सरकारी प्रतिष्ठानों को किराये पर लेकर चलाता है। उसने कोई उद्योग नहीं लगाये है। चूंकि कई हवाई अड्डों के रखरखाव का ठेका अडानी ने प्राप्त कर लिये है, इंडियन एयरलाइंस को भी अपने अधीन करने का शायद विचार कर रहा हो। इसीलिए अहमदाबाद में इंडियन एयरलाइंस के हवाई जहाज के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने और लगभग तीन सौ लोगों के मारे जाने के बाद आये दिन समाचारों में इंडियन एयरलाइंस के विमानों की खामियों को लेकर समाचार छपवायें जा रहे हैं।

अहमदाबाद हादसा के पीछे कई कारण हो सकते हैं। अहमदाबाद हवाई अड्डे का रखरखाव भी अडानी के पास है। गुजरात वैसे भी व्यापारिक पूंजीपतियों और राजनीतिक पार्टियों-नेताओं की साठगांठ की प्रयोगशाला है। कहीं इस प्रयोगशाला में टाटा पर तो कोई परीक्षण नहीं किया जा रहा है?

एक बीमार एयरलाइंस को सम्भाल कर फिर से सक्षम बनाने से पहले ही कहीं उसे अडानी के हाथों में लेने के प्रयोग तो नहीं किये जा रहे है? अगर इंडियन एयरलाइंस को इसी तरह से नुकसान पहुंचाया जाता रहा हो तो भी सम्भवतः टाटा इंडियन एयरलाइंस को खरबों का घाटा होने के बाद भी नहीं बेचेगा। खुद टाटा ही उसे चलायेगा चाहे पुराने विमानों को जमीन पर ले आना पडे.और नये विमान खरीद कर बेहतर सेवायें देनी पड़े। किसी की बदनियती से बिछाये जाने वालें काटों के बावजूद टाटा जिंदा रहेगा जैसे कोटा नहीं मरा।

- राम निवास बैरवा,
पूर्व क्षेत्रीय भविष्य निधि
आयुक्त

चूरू शहर में भरे बरसाती पानी से आमजन व छात्र परेशान

बरसात के पानी की निकासी के अभाव में शहर में जगह-जगह भरे गंदे पानी से आमजन का हाल बेहाल है

चूरू, (निसं)। अधिकारी और जनप्रतिनिधि बैठकों और मंचों पर विकास के नाम पर बड़े-बड़े भाषण देते हैं और दावा करते हैं कि शहर के विकास के लिए करोड़ों रुपए का बजट खर्च हो गया, परंतु हकीकत कुछ और ही है।

जानकारी के अनुसार बरसात के पानी के निकासी के अभाव में शहर में जगह-जगह भरे गंदे पानी से आमजन का हाल बेहाल है। इससे लोगों का घरों से बाहर निकलना भी दुर्लभ हो रहा है। वाहन चालकों व विद्यार्थियों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। यदि यही हाल रहे तो आगामी बारिश के दिनों में चूरू की स्थिति और अधिक दयनीय हो जाएगी और इसका खामियाजा चूरू की जनता को भुगतना पड़ेगा। जानकारी के अनुसार शहर के लोहिया कॉलेज के आगे पिछले दो दिनों से भरे बरसाती पानी से सबसे ज्यादा परेशानी विद्यार्थियों को हो रही है। विद्यार्थी इस दो फीट गहरे पानी से होकर महाविद्यालय में प्रवेश करते हैं और कई छात्र-छात्राएं इस बड़े नाले में गिरकर चोटिल हो गये हैं। ठीक ऐसा ही हाल भरतिया अस्पताल, पुराने कलेक्ट्रेट के सामने, चांदनी चौक क्षेत्र सहित शहर के अनेक स्थानों पर है। शहरवासियों ने बताया कि यदि समय रहते हुए प्रशासन इसका समाधान नहीं करेगा, तो इसके नतीजे और बूरे होंगे।

बरसात के पानी की निकासी के अभाव में चूरू शहर में जगह-जगह पानी भरा हुआ है।

- लोगों का घरों से बाहर निकलना भी दुर्लभ हो रहा है, वाहन चालकों व विद्यार्थियों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है
- लोहिया कॉलेज के आगे दो फीट पक पानी भरा हुआ है